



लघु वनोपज से समृद्धि

निर्झरणी नंदेहा* और आयुषी त्रिवेदी*

लघु वनोपज के जैसे ईंधन की लकड़ी, चारा, लाख, फाइबर, दवाएं, सब्जियां, कंद, जड़ें, पत्ते, फल, मांस, आवास सामग्री, आदि जनजातीय लोगों के लिए दिन-प्रतिदिन की आजीविका के अभिन्न अंग हैं। छत्तीसगढ़ में घने जंगल हैं और ये लघु वनोपज में समृद्ध हैं। ये काफी बड़े स्तर पर राजस्व आय में योगदान दे रहे हैं। राज्य में उपलब्ध महत्वपूर्ण लघु वनोपज जैसे-चिरौंजी, अमचूर, करंजी, मरोरफली, आम गिरी, इमली, कोसा कोकून, पेंग बीज, कोरकोटी बीज, निर्मली बीज, अंबाड़ी, आवला, चरोटा बीज, चिरायता, महुआ, तोरा, हर्षा, बांस, बोड़ा, मशरूम, धवई फूल, भेलवा बीज, वर्ष बीज, माहुल (बीज, पत्ती, रस्सी), थिकुर, विभिन्न प्रकार के कंद और औषधीय पौधे आदि प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं।

लघु वनोपज उन लोगों के विकास और अस्तित्व के एक अनिवार्य घटक हैं, जो जंगलों में और उनके आसपास रहते हैं तथा उन पर निर्भर हैं। इनका आर्थिक मूल्य उपयोग या बाजार मूल्य के संदर्भ में प्रायः, अज्ञात होता है या अक्सर कम करके आंका जाता है। लाखों वन आश्रित ग्रामीण लोग निर्वाह, आय, रोजगार, ऊर्जा, पौष्टिक खाद्य-पदार्थ, चारा, निर्माण सामग्री, दवाएं और विभिन्न प्रकार के उत्पादों और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं के लिए लघु वनोपज पर निर्भर हैं।

आजीविका में महत्व

राष्ट्रीय कृषि आयोग के अनुसार, विभिन्न लघु वनोपज में जनजातीय लोगों के जीवन में वास्तव में आर्थिक क्रांति लाने की क्षमता है। लघु वनोपज का योगदान

*भाकृअनुप-केन्द्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान, भोपाल (मध्य प्रदेश)



बीजा साल



चिरौंजी

आदिवासी लोगों की वार्षिक आय में 20 प्रतिशत से 40 प्रतिशत तक होता है। इनमें से अधिकांश लघु वनोपज महिलाओं द्वारा एकत्र और बेचे जाते हैं। ये आदिवासी समुदाय बड़े पैमाने पर प्राचीनकाल से वन क्षेत्रों में निवास करते हैं तथा मुख्य धारा के जीवन से अलगाव में रहते हैं, सद्भाव

सारणी 1. छत्तीसगढ़ राज्य में आर्थिक रूप से प्रमुख उपयोगी वनोपज की उपलब्धता

क्र.सं.	स्थानीय नाम	वनस्पति नाम	प्रकार	उपयोगी भाग
1.	डांगकांडा	डायोस्कोरिया बल्बिफेरा	लतादार	पत्तियां, कंद और जड़ें
2.	केओटी	वेंटीलैगो कैलीकुलता	लतादार	फूल, बीज, छाल और जड़ें
3.	सिरी	बौहिनिया वाहली	लतादार	पत्तियां, बीज और तना
4.	अनंतमूल	हेमाइडसमस इंडिका	लतादार	सम्पूर्ण पौधा
5.	केवकांडा	कोस्टस इग्नस	लतादार	पत्तियां एवं कंद
6.	गिलोय	टिनोस्पेरा कॉडिफोलिया	लतादार	तना
7.	बाइचंदी	डायोस्कोरिया हेंपिडा	लतादार	कंद, जड़ें और प्रकंद



तेंदु



बहेरा



सागोन

बनाए रखते हैं और प्रकृति के साथ सहजीवी संबंध रखते हैं। भारत में जनजातीय लोगों को लघु वनोपज एकत्र करने का अधिकार परंपरागत रूप से प्राप्त है। शुरुआत में, वे केवल घरेलू खपत के लिए लघु वनोपज एकत्र करते थे, लेकिन बाद में उन्होंने नकद आय के लिए भी इन्हें बेचना शुरू किया। छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले में, लगभग 75 प्रतिशत वन आश्रित लोग हैं, जो पूरे वर्ष अपने भोजन की आपूर्ति कंद, फूल और फलों द्वारा करते हैं।

लघु वनोपज की श्रेणियां और उपयोग

एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में और यहां तक कि एक समुदाय के घरों के बीच भी वन उत्पादों का किस हद तक उपयोग किया जाता है, इसमें काफी भिन्नता है। इस भिन्नता के कारण, लघु वनोपज के उपयोग के बारे में सामान्यीकरण करना मुश्किल है। उपयोग के उद्देश्य के आधार पर इन्हें विभिन्न श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है उदाहरण के लिए, भोजन, ईंधन, दवा, घरेलू बर्तन और कृषि उपकरण; काटे गए पौधों का हिस्सा (पत्ती, फल, तना और जड़ें) और उपयोग का स्तर (स्वयं सहायक और व्यावसायिक) (सारणी-1, 2, 3)। इन सबके बीच आय का प्रमुख स्रोत मधुका लतीफोलिया (महुआ) फूल से

सारणी 2. छत्तीसगढ़ राज्य में आर्थिक रूप से उपयोगी प्रमुख जड़ी-बूटियों की उपलब्धता

क्र.सं.	स्थानीय नाम	वनस्पति नाम	प्रकार	भाग
1.	तिखुर जड़ी	करकुमा अनुस्तिफोलिया	जड़ी-बूटी	कंद पाउडर
2.	कालमेघ	एंड्रोग्राफिस पैनिक्कुलता	जड़ी-बूटी	पूरे भाग
3.	चरोटा	कैसिया तोरा	जड़ी-बूटी	बीज और पत्ते
4.	वन जीरा	वनोनिया एंथेलमिटिका	जड़ी-बूटी	बीज
5.	मकोय	सोलनम नाइग्रम	जड़ी-बूटी	जड़, पौधे और फल
6.	दशमूल	डेडलकैथस रोजस	जड़ी-बूटी	जड़



छिंद



महुआ

प्राप्त होता है, बौहिनिया वाहली (महुल) के पत्ते, डायोस्पायरोस मेलानॉक्सिलॉन (तेंदु) के पत्ते, सेलास्ट्रस पैनिक्कुलटस (पेंग), टेमेरेन्डस इंडिका (इमली) फल, मैगिफेरा इंडिका (आम), फीनिक्स एकालिस (छिंद), कैरियोटा यूरेन्स (सल्फी) जूस,

थायसनोलियाना मैक्सिमा (फूल बहारी) और डेंड्रोकलमस स्ट्रिक्टस बैबू उत्पाद हैं। अधिकतम प्रजातियों का उपयोग औषधीय प्रयोजनों में किया जाता है। चिन्हित 112 पौधों की प्रजातियों में से 108 प्रजातियां औषधीय पौधों के अंतर्गत आती हैं।

पोषण और दवा के स्रोत

पारंपरिक वन समुदायों में, कई छोटे वन उत्पाद घरेलू निर्वाह के हिस्से हैं, जो सूक्ष्म पोषक तत्व, कार्बोहाइड्रेट, वसा और प्रोटीन के रूप में या अन्य आवश्यक सूक्ष्म पोषक खनिज प्रदान करते हैं। भोजन के दूसरे महत्वपूर्ण स्तर में, लघु वनोपज का उपयोग पशुओं को खिलाने के लिए किया जाता है। लघु वनोपज के रूप में घास और पत्ते ग्रामीण समुदायों द्वारा पशुओं को खिलाने या घर में रखने के लिए या अन्य जरूरतों को पूरा करने के लिए एकत्र किए जाते हैं जैसे कि उन्हें सोने के लिए ग्राउंड कवर प्रदान करना। कई संस्कृतियों में ऐसे पशुधन, आहार और जीवित स्टेपल (जैसे-दूध, मांस, चमड़ा, फर, बाल, सींग और खाद) प्रदान करते हैं। इन अखाद्य लघु वनोपज को एकत्र करना ग्रामीण विकास के लिए उपयोगी हो सकता है।



भिलवां

सारणी 3. छत्तीसगढ़ राज्य में आर्थिक रूप से प्रमुख उपयोगी पेड़ों की उपलब्धता

क्र.सं.	स्थानीय नाम	वनस्पति नाम	प्रकार	भाग	औषधीय उपयोग	अन्य उपयोग
1.	चिरौंजी	बुकाननिया लैंगान	पेड़	बीज, गोंद और छाल	कुष्ठ रोग के लिए गोंद; एसिडिटी, अपचायक, कब्ज और दस्त के लिए जड़ें; पत्ते त्वचा रोग और खांसी के लिए	जलावन लकड़ी और लकड़ी का कोयला
2.	तेंदु	डायोस्पायरोस मेलानोक्सीलोन	पेड़	फल, पत्ते, ईंधन ऊष्मीय लकड़ी	मानसिक विकार, दस्त, घबराहट-दिल की धड़कन, मूत्र, त्वचा और रक्त रोग में	तंबाकू लपेटने के रूप में, लकड़ी का उपयोग भवन निर्माण और गाड़ियों की शाफ्ट के लिए
3.	महुआ	मधुका इंडिका	पेड़	फूल और साबुत पौधा	जीवाणुरोधी, बढईगिरी का काम, दर्द निवारक, शराब और पूजा में	इमारती लकड़ी
4.	कुसुम	श्लीचेरा ओलियोसा	पेड़	बीज, छाल और लाख	मवेशियों के घाव और छाले, कुष्ठ रोग, अल्सर, त्वचा की सूजन और मलेरिया में	मकान एवं जहाज और संगीत वाद्ययंत्र निर्माण
5.	भिलावां	सेमेकार्पस एनाकार्डियम	पेड़	बीज, फल, गोंद और तेल	पाचक, उत्तेजक, ब्रोंकाइटिस, पेचिश, बुखार, दमा, बवासीर, महिलाओं में बाइपन, सिरदर्द, त्वचा रोग और खुजली, नशीले पदार्थों के रूप में	फर्श ड्रेसिंग लाख एवं रंजक, इन्सुलेट सामग्री, प्लास्टिक उद्योग में रबर सामग्री और लकड़ी की सफेद चींटियों से रक्षा के लिए
6.	बीजा साल	टेरोकार्पस मासुपियम	पेड़	पत्तियां और छाल	दस्त, सफेदी, एक्जिमा, सोरायसिस, मोटापा और मधुमेह, त्वचा संबंधी समस्याएं गम एक्सयूडिशन शरीर के खिलाफ तने से निकलने वाले उत्सर्जन का उपयोग किया जाता है	दरवाजे और खिड़की के फ्रेम, कृषि उपकरण, नाव निर्माण, गाड़ियां, रेलवे गाड़ियां, रेलवे से संबंधित विभिन्न उपयोग।
7.	इमली	टेमेरेन्डस इंडिका	पेड़	फूल, फल, जड़, छाल, तना, बीज और पत्ते	घाव, अल्सर, फोड़े, चकत्ते, दमा, हृदय, रक्त शर्करा, खांसी, बुखार, सूजन, सूजन, दर्द से राहत, मलेरिया और आंतों के कीट।	पेंट्स टैनिन को वार्निश करता है; स्याही में या रंगों को ठीक करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। बढईगिरी, चीनी मिलें, पहिए, हब, लकड़ी के बर्तन, कृषि उपकरण, मोटर, नाव के तख्त, खिलौने, पैनल और फर्नीचर के लिए।
8.	बहेरा	टर्मिनलिया बेलरिका	पेड़	पेड़ की छाल, फल, बीज,	एस्केरिस, भूरे बाल, स्वर बैठना, कमजोर दृष्टि, रक्ताल्पता, दमा, बवासीर, कुष्ठ रोग, यकृत रोग, दस्त	प्राकृतिक रंग
9.	सागोन	टेक्टोना ग्रैंडिस	पेड़	पूरा पौधा	जलन, गठिया, किडनी, त्वचा रोग, मधुमेह और अल्सर।	इमारती लकड़ी
10.	छिंद	फीनिक्स एकौलिस फीनिक्स सिल्वेस्ट्रिस	झाड़	पत्तियां, फल और रस	पेट की शिकायत, बुखार, उल्टी, चेतना की हानि, दांत दर्द, सूजाक, श्वसन रोग बुखार, दस्त।	पत्तियों का उपयोग चटाई, रस्सी, बैग बनाने के लिए किया जाता है। इसके अलावा छतरियां, बाड़ और साथ ही छप्पर की छतों के लिए। वृक्ष से प्राप्त होने वाला रसपान शीतल पेय माना जाता है। तना स्थानीय घर की छतों और दीवारों को बनाने में उपयोग किया जाता है।



हरा

लघु वनोपज पर वैश्विक ध्यान

पिछले दशक में संरक्षण और विकास संगठनों के बीच लघु वन उत्पादों में वैश्विक रुचि में तेजी से वृद्धि देखी गई है। इस बढ़ती मान्यता के कारण लघु वन उत्पाद वन आश्रित समुदायों की आजीविका, घरेलू खाद्य सुरक्षा और पोषण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। अतिरिक्त रोजगार और आय के साथ उद्यमों के लिए अवसर प्रदान कर सकते हैं।

वन आश्रित समुदायों की आजीविका

बढ़ाने के लिए हस्तक्षेप की आवश्यकता है। निजी और सार्वजनिक क्षेत्रों में मौजूदा योजनाओं एवं कार्यक्रमों के अभिसरण के माध्यम से भंडारण, ग्रेडिंग, प्रसंस्करण और मूल्यवर्द्धन से संबंधित सुविधाओं को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। समुदायों को बाजार, नीति और उत्पादों के बारे में जानकारी के साथ सशक्त बनाया जाना चाहिए, ताकि वे बेहतर लाभ की रणनीति बना सकें और उससे फायदा प्राप्त कर सकें।